पाठ - दान का हिसाब

कठिन शब्द -

- लकदक
- मुट्ठी
- राजसभा
- नामी
- विद्वान
- सज्जन
- सत्कार
- अकाल
- राजभंडार
- दिवालिया
- प्रकोप
- गुहार
- दुहाई
- राजकोष
- ज़रूरतमंद
- दुखिया
- पहरेदार
- कर्त्तव्य
- आशीर्वाद
- दाता
- सन्यासी
- महाशय

egyanarchive

शब्दार्थ -

1. लकदक - चमकदार, चकाचौंध, शानदार
2. राजसभा - राजा का दरबार, संसद का ऊपरी सदन
3. नामी - प्रसिद्ध, मशहूर, नामी-गिरामी

4. विद्वान - विद्वान, ज्ञानी, शिक्षित
5. सज्जन - सज्जन, भला आदमी, नेक इंसान
6. सत्कार - सम्मान, आदर, स्वागत
7. अकाल - सूखा, भुखमरी, कमी
8. राजभंडार - राजा का खजाना, सरकारी खजाना
9. दिवालिया - कंगाल, दिवालिया, गरीब
10. प्रकोप - क्रोध, ग़ुस्सा, आक्रोश
11. गुहार - पुकार, मदद की मांग
12. दुहाई - फरियाद, मदद की पुकार
13. राजकोष - राजा का खजाना, सरकारी खजाना
14. दुखिया - दुखी, गरीब, परेशान
15. कर्त्तव्य - जिम्मेदारी, फर्ज
16. आशीर्वाद - दुआ, शुभकामनाएं
17. दाता - दान करने वाला, उदार
18. महाशय - महोदय, आदरणीय
19. लोभी - लालची
20. हुक्म - आदेश
21. मुक्त कर दीजिए - स्वतंत्र कर दीजिए
22. लाचार होकर - मजबूर होकर

egyanarchive

कहानी से

(क) राजा किसी को भी दान क्यों नहीं देना चाहता था?

उत्तर: राजा किसी को भी दान इसलिए नहीं देना चाहता था क्योंकि वह कंजूस था। उसे ऐसा लगता था कि दान देने से राजकोष खाली हो जाएगा।

(ख) राजदरबार के लोग मन ही मन राजा को बुरा कहते थे लेकिन राजा का विरोध क्यों नहीं कर पाते थे?

उत्तर: राजदरबार के लोग राजा का विरोध इसलिए नहीं कर पाते थे क्योंकि उन्हें राजा के क्रोधित होने का भय रहता था। वे सोचते थे-अगर वे राजा का विरोध करेंगे तो राजा उन्हें दण्ड देगा।

(ग) राज्यसभा में सज्जन और विद्वान लोग क्यों नहीं जाते थे?

उत्तर: राजसभा में सज्जन और विद्वान लोगों का सत्कार नहीं किया जाता था। इसलिए वे राजसभा में नहीं जाते थे।

(घ) संन्यासी ने सीधे-सीधे शब्दों में भिक्षा क्यों नहीं माँग ली?

उत्तर: संन्यासी ने सीधे-सीधे शब्दों में भिक्षा इसलिए नहीं माँगी क्योंकि वह जानता था कि राजा बहुत कंजूस है और एकबार में वह बड़ी रकम नहीं दे सकता है।

(ङ) राजा को संन्यासी के आगे गिड़गिड़ाने की जरूरत क्यों पड़ी?

उत्तर: संन्यासी को भिक्षा देते-देते राजकोष खाली होता जा रहा था। अतः राजकोष को बचाने के लिए राजा को संन्यासी के आगे गिड़गिड़ाना पड़ा।

अंदाज़ अपना-अपना

तुम नीचे दिए गए वाक्यों को किस तरह से कहोगे?

(क) दान के वक्त उनकी मुट्ठी बंद हो जाती थी।

(ख) हिसाब देखकर मंत्री का चेहरा फीका पड़ गया।

(ग) संन्यासी की बात सुनकर सभी की जान में जान आई।

(घ) लाखों रुपए राजकोष में मौजूद हैं। जैसे धन का सागर हो

उत्तर:

(क) दान के समय उनके हाथ से पैसे नहीं निकलते थे।

(ख) हिसाब देखकर मंत्री घबरा गया।

(ग) संन्यासी की बात सुनकर सभी ने राहत की साँस ली।

(घ) राजकोष में इतने रुपये-पैसे हैं जैसे धन का सागर हो।

egyanarchive

साथी हाथ बढ़ाना

कभी-कभी कुछ इलाकों में बारिश बिल्कुल भी नहीं होती। नदी-नाले तालाब, सब सुख जाते हैं। फसलों के लिए पानी नहीं मिलता। खेत सूख जाते हैं। पशु-पक्षी, जानवर, लोग भूखे मरने लगते हैं। ऐसे समय में वहाँ रहने वाले लोगों को मदद की ज़रूरत होती है। तुम भी लोगों की मदद ज़रूर कर सकते हो। सोचकर बताओ तुम अकाल में परेशान लोगों की मदद कैसे करोगे?

उत्तर: धन और भोजन-सामग्री एकत्र कर मैं अकाल-पीड़ितों के बीच जाऊँगा और उनकी मदद करूंगा।

जिम्मेदारी अपनी-अपनी

तुम्हारे विचार से राजदरबार में किसकी क्या-क्या जिम्मेदारियाँ होंगी।

(क) मंत्री

(ख) भंडारी

उत्तर:

(क) मंत्री की जिम्मेदारी पूरे राज्य की देखभाल करना होता है। वह राजा के काफी निकट होता है और हर तरह के मामले में उसे उचित सलाह देता है।

(ख) भंडारी की जिम्मेदारी राजकोष को सुरक्षित रखना है। पूरे राज्य के खर्च का हिसाब-किताब रखना भंडारी का ही काम होता है। राजकोष में कितना धन है, उस धन का खर्च किन-किन मदों में हो रहा है-इन सभी-बातों की जानकारी वह राजा को समय-समय पर देता रहता है।

कर्ण जैसा दानी

सभी ने कहा, "हमारे महाराज कर्ण जैसे ही दानी हैं।"

पता करो कि

(क) कर्ण कौन थे?

(ख) कर्ण जैसे दानी का क्या मतलब है?

(ग) दान क्या होता है?

(घ) किन-किन कारणों से लोग दान करते हैं?

उत्तर:

(क) कर्ण कुंती के पुत्र थे। वे बहुत बड़े दानी माने जाते थे।

(ख) कर्ण बहुत बड़े दानी थे। उन्होंने अपना कवच-कुण्डल तक दान में दे दिया था। उनसे बड़ा दानी कोई नहीं हुआ है। कर्ण जैसे दानी का मतलब है-कर्ण की तरह अपना सर्वस्व दान करने में जरा भी संकोच न करना।

(ग) गरीबों, दुखियों की सहायता के लिए दिया गया धन दान कहलाता है।

(घ) कई कारणों से लोग दान करते हैं, जैसे-पुण्य कमाने के लिए, परोपकार के लिए, नाम कमाने के लिए। आदि।

egyanarchive

कहानी और तुम

(क) राजा राजकोष के धन का उपयोग किन-किन कामों में करता था?

तुम्हारे घर में जो पैसा आता है वह कहाँ-कहाँ खर्च होता है? पता करके लिखो।

उत्तर: राजा राजकोष के धन का उपयोग अपने वस्त्रों, मनोरंजन और महल की सजावट पर करता था।

मेरे घर में जो पैसा आता है वह खाने-पीने, पढ़ाई-लिखाई, बिजली-पानी, गैस, टेलीफोन, कपड़ों आदि पर खर्च होता है।

(ख) अकाल के समय लोग राजा से कौन-कौन से काम करवाना चाहते थे?

तुम अपने स्कूल या इलाके में क्या-क्या काम करवाना चाहते हो?

उत्तर: लोग राजा से अकाल पीड़ितों की मदद करवाना चाहते थे। वे चाहते थे कि राजा जरूरतमंदों को कम-से-कम दस हजार रुपये दे दे जिससे वे अपना पेट भर सकें।

कैसा राजा!

(क) राजा किसी को दान देना पसंद नहीं करता था। तुम्हारे विचार से राजा सही था या गलत? अपने **उत्तर**: का कारण भी बताओ।

उत्तर: मेरे विचार में राजा बिल्कुल गलत था। राजा जिस देश पर शासन करता है, उसके सभी लोग उसकी प्रजा हैं! प्रजा की देखभाल करना, उन्हें खुश रखना राजा का परम कर्तव्य है। अगर वह ऐसा नहीं करता है तो वह गलत रास्ते पर है।

(ख) राजा दान देने के अलावा और किन-किन तरीकों से लोगों की सहायता कर सकता था?

उत्तर: लोगों को भोजन सामग्री और वस्त्र देकर उनकी सहायता कर सकता था। वह उनके लिए पक्की सड़कें, और कुँए बनवा सकता था। सड़कों के किनारे पेड़-पौधे लगवा सकता था। अस्पताल बनवा सकता था।

पूर्व और पश्चिम

पूर्वी सीमा के लोग भूखे प्यासे मरने लगे।

(क) "पूर्व" शब्द के दो अर्थ हैं।

- **पूर्व-** एक दिशा
- **पूर्व-** पहले।

नीचे ऐसे ही कुछ और शब्द दिए गए हैं जिनके दो-दो अर्थ हैं। इनका प्रयोग करते हुए दो-दो वाक्य बनाओ।

उत्तर:

1. जल
   - पीने के लिए स्वच्छ जल चाहिए।
   - सब्जी जल गई।
2. मन
   - आज मेरा मन बहुत अच्छा है।
   - तौलकर बताओ कि इस बारे में कितना मन चावल है।
3. मगर
   - वह आया मगर तुरंत चला गया।
   - पानी में रहकर मगर से बैर नहीं करना चाहिए।

(ख) नीचे चार दिशाओं के नाम लिखे हैं। तुम्हारे घर और स्कूल के आसपास इन दिशाओं में क्या-क्या है? तालिका भरो-

उत्तर:

दिशा	**घर के पास**	**स्कूल के पास**

egyanarchive

पूर्व	मदर डेरी की दुकान	सड़क
पश्चिम	पार्क	राशन की दुकान
उत्तर	सड़क	फल की दुकान
दक्षिण	घर	दवा की दुकान।

egyanarchive